विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -०८ -०४ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज स्वर के बारे में अध्ययन करेंगे ।

स्वर

स्वर की परिभाषा

जिन वर्णों को स्वतंत्र रूप से बोला जा सके उसे स्वर कहते हैं। परम्परागत रूप से स्वरों की संख्या 13 मानी गई है लेकिन उच्चारण की दृष्टि से 10 ही स्वर होते हैं।'स्वर' का अर्थ है, ऐसा वर्ण जिसका उच्चारण अपने आप हो सके, जिसको उच्चारण के लिए दूसरे वर्ण से मिलने की आवश्यकता न हो। स्वरों का दूसरा नाम 'अच्' भी है।

उच्चारण के आधार पर स्वर: अ, आ , इ , ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ आदि।

लेखन के आधार पर स्वर: अ, आ, इ , ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , अं , अः , ऋ आदि।

स्वर के भेद

स्वर के दो भेद होते है।

- मूल स्वर
- संयुक्त स्वर

मूल स्वर: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ

संयुक्त स्वर: ऐ (अ +ए) और औ (अ +ओ)

मूल स्वर के भेद

मूल स्वर के तीन भेद होते है।

- ह्रस्व स्वर
- दीर्घ स्वर
- प्लुत स्वर

ह्रस्व स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता हैं उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार हैं- अ, इ, उ, ऋ। 'ऋ' की मात्रा (ृ) के रूप में लगाई जाती है तथा उच्चारण 'रि' की तरह होता है। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। सरल शब्दों में- स्वरों उच्चारण में अधिक समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते है।

दीर्घ स्वर सात होते है -आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। दीर्घ स्वर दो शब्दों के योग से बनते है।

जैसे- आ =(अ +अ)

ई =(इ +इ)

ऊ =(उ +उ)

ए =(अ +इ)

ऐ =(अ +ए)

ओ =(अ +उ)

औ =(अ +ओ)

प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्रायः इनका प्रयोग दूर से बुलाने में किया जाता है। सरल शब्दों में- जिस स्वर

के उच्चारण में तिगुना समय लगे, उसे 'प्लुत' कहते हैं। इसका चिह्न (ऽ) है। इसका प्रयोग अकसर पुकारते समय किया जाता है। जैसे- सुनोऽऽ, राऽऽम, ओऽऽम्।

हिन्दी में साधारणतः प्लुत का प्रयोग नहीं होता। वैदिक भाषा में प्लुत स्वर का प्रयोग अधिक हुआ है। इसे 'त्रिमात्रिक' स्वर भी कहते हैं।